


---

paramAtmAShTakam

——  
परमात्मशुद्धम्

——  
Document Information



---

Text title : paramAtmAShTakam

File name : paramAtmAShTakam.itx

Category : aShTaka, shiva, yogAnanda

Location : doc\_shiva

Author : yogAnandatIrtha

Proofread by : PSA Easwaran

Description-comments : Brihatstotraratnakara 1, Narayana Ram Acharya, Nirnayasagar,  
stotrasankhya 211

Latest update : February 28, 2017

Send corrections to : sanskrit at cheerful dot c om

---

This text is prepared by volunteers and is to be used for personal study and research. The file is not to be copied or reposted without permission, for promotion of any website or individuals or for commercial purpose.

**Please help to maintain respect for volunteer spirit.**

---


Please note that proofreading is done using Devanagari version and other language/scripts are generated using **sanscript**.

---

September 17, 2023

*sanskritdocuments.org*

---



परमात्माष्टकम्



श्रीगणेशाय नमः ॥

परमात्मैस्तव प्रामौ कुशलोऽस्मि न संशयः ।  
तथापि मे मनो दृष्टं भोगेषु रमते सदा ॥ १ ॥

यदा यदा तु वैराग्यं भोगेभ्यश्च करोम्यहम् ।  
तदैव मे मनो मूढं पुनर्भोगेषु गच्छति ॥ २ ॥

भोगान्भुक्त्वा मुदं याति मनो मे यज्यलं प्रभो ।  
तव स्मृतिर्यदाऽऽयाति तदा भाति बहिर्भुजम् ॥ ३ ॥

प्रत्यहं शास्त्रनिययं चिन्तयामि समाहितः ।  
तथापि मे मनो मूढं त्यक्त्वा त्वां भोगमिच्छति ॥ ४ ॥

शोकमोहौ मानमदौ तवाह्नाद्भवन्ति वै ।  
यदा बुद्धिपथं यासि यान्ति ते विलयं तदा ॥ ५ ॥

कृपां कुरु तथा नाथ त्वयि चित्तं स्थिरं यथा ।  
मम स्याज्ज्ञानसंयुक्तं तव ध्यानपरायणम् ॥ ६ ॥

मायया ते विमूढोऽस्मि न पश्यामि छिताछितम् ।  
संसारपारपाथोधौ पतितं मां समुद्दुर ॥ ७ ॥

परमात्मैस्त्वयि सदा मम स्यान्निश्चला मतिः ।  
संसारदुःखगलनात्त्वं सदा रक्षको मम ॥ ८ ॥

परमात्मन एहं स्तोत्रं मोहविच्छेदकारकम् ।  
ज्ञानदं च भवेन्नृणां योगानन्देन निर्मितम् ॥ ९ ॥

एति श्रीयोगानन्दतीर्थविरचितं परमात्माष्टकं सम्पूर्णम् ॥

*paramAtmAShTakam*

pdf was typeset on September 17, 2023

Please send corrections to [sanskrit@cheerful.com](mailto:sanskrit@cheerful.com)

